EDUCATION = SALVATION DURING ALIVE

सा विद्या या विमुक्तये।

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

MUNI INTERNATIONAL SCHOOL
AIKLAVYA
We refuse to accept limitation

Frederick William I of Prussia
(14 August 1688 – 31 May 1740)

EDUCATION FOR MASS which was designed **for the purpose of ENRICHMENT AND EXPANSION OF EMPIRE/ANY SYSTEM(capitalism or communism) by Frederick William I of Prussia** which had mainly six goals.

1. UNIFORMITY IN THOUGHT, WORK AND DEED.
2. LIKE MINDED CITIZENS WITH 10-20% EXCEPTIONS.
3. TOP CREAMS FOR CIVIL SERVANTS AND OTHER POLICY MATTERS.
4. BRILLIANT, HARD WORKING OUTCOMES OF ACADEMIC FOR DIRECTOR, MANGERS
5. AVERAGE QUALIFYING STUDENTS FOR FACTORIES, WORK PLACE AND ENFORCEMENTS TYPE WORK.
6. LAST BUT NOT LEAST. THIS IS FOR FORCES AND LAW ABIDING AND EMPIRE INTEREST SAVING AGENCY.

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

MUNI INTERNATIONAL SCHOOL
AIKLAVYA
We refuse to accept limitation

Are we not training children to be OBIDIENT, MENTAL SLAVE OR LIVE ROBOTS ?????

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

MUNI INTERNATIONAL SCHOOL
AIKLAVYA
We refuse to accept limitation

क्या शिक्षा मानव को इतना भी नहीं समझा/सीखा पाई की यदि अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगे तो सुरक्षा के नियमो का पालन स्वेच्छा से कर लिया जाये ???

पुलिस को 21 दिन तक लॉकडाउन का पालन करवाने के लिए सड़क पर बना रहना पड़े तो धिक्कार है हमें अपनी शिक्षा, संस्कार और जिंदगी पर...

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

सदियों पहले श्री कृष्ण ने गीता में कहा था - पार्थ, आत्मा अजर अमर है। ~~मृत्यु~~ - मृत्यु नहीं रचना-विरचना है भौतिक-रासायनिक संयोजन का ये नियम है। भौतिकी में वस्तु का रूपांतरण होता है। अस्वस्थ मांस, मज्झा, अस्थियां पंचतत्व में मिलकर नए व स्वस्थ पंचतत्व की यात्रा करते है और आत्मा जीवन की यात्रा शरीर के साथ करती है जिसको मानव जाति कहते है।

मानव जाति का प्रयोजन अपने महत्व को पहचानकर श्रम के विश्राम का उत्सव मनाना है।

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

घर में क्या चाहिए मम्मी-पापा या टीचर/प्रोफेशनल्स ???

क्या परिवार के मेंबर्स को घर में आपका पद चाहिए या सम्बन्ध ???

क्या सिर्फ किसी स्किल में अतिकुशल व्यक्ति परिवार व समाज के लिए हमेशा उपयोगी और पूरक होता है ???

क्या आपने कभी गंभीरता से सोचा है की अपने बच्चे की पढाई के आलावा इंसान कैसा बनाना है और कैसे बनाएंगे ???

किसी भी स्किलफुल व्यक्ति की जरुरत स्किल परफॉरमेंस की जगह पर है न की मानवीय संबंधों में उसकी जरुरत है, जैसे एक बहुत बढ़िया डॉक्टर की जरुरत उसके मरीजों को है न कि उसकी पत्नी, माता-पिता, बच्चों, और दोस्तों को। ये डॉक्टर अपने बच्चों के पिता है, माता-पिता के लिए बेटा है, पत्नी के लिए पति है और दोस्तों के लिए दोस्त है। मानवीय संबंधों में मूल्यों की जरुरत है न की स्किल की।

यही शिक्षा और परम्परा की बड़ी असफलता है।

सम्बन्ध बहुमुखी निर्वाह के अर्थ में है।

अक्सर हम एक ही भाव में रहते है जो एक बड़ी त्रासदी है। यदि आप डॉक्टर है तो ये आपका कार्य है लेकिन घर में तो आप किसी को पति रूप में, किसी को पुत्र रूप में , किसी को पिता रूप में चाहिए।

संबंधों में हर बार समस्या का जिक्र समाधान के लिए नहीं बल्कि सहानुभूति आदि के लिए भी होता है।

आप **परिवार** के लिए केवल आजीविका कमाने के साधन भर है तो जैसे ही कोई और कमाना शुरू करेगा तो जल्दी ही आपकी उपयोगिता ख़त्म हो जाएगी। **आजीविका** कमाना सम्बन्ध निर्वाह का **केवल एक आवश्यक पहलू** है।

यदि परिवार में सम्बन्ध आहार, आवास, अलंकार, विचार और जरूरतों से है तो ऐसे **परिवार का टूटना निश्चित** है। परन्तु यदि परिवार में सम्बन्ध व्यवहार व समझ से निश्चित है तो **परिवार के टूटने की सम्भावनाये न के बराबर** है। परिवार में सम्बन्ध में **मूल्यांकन करते हुए व्यवहार के साथ उभय तृप्ति** होती है।

यदि समाज व प्रकृति प्रतिकूल हो जाये तो परिवार में केवल एक आवश्यक पहलू भी पूरा नहीं कर पाएंगे (वर्तमान उदाहरण - कोरोना वायरस),
और आप (मानव जाति) मात्र सूचना भर रह जायेंगे।

MUNI INTERNATIONAL SCHOOL
AIKLAVYA
We refuse to accept limitation

साधारणत स्कूली शिक्षा में पांच विषय होते है दो या तीन भाषाएँ, गणित, विज्ञानं और सामाजिक विज्ञानं (History, Geography, Civics & Economics).

परन्तु अब हमें एक और विषय **LIFE** को जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है जिसमे जीवन के विभिन्न पाठ होंगे जैसे - हैप्पीनेस, सम्बन्ध, Entrepreneurship, Digitalization, Human Values, स्वयं के होने का उद्देश्य, NATURE etc. - जो जीवन को कैसे जीना है को सिखाएगा। बाकि विषय इस लाइफ विषय के लिए supportive विषय हो।

और क्यों न एग्जाम इस लाइफ सब्जेक्ट का ही हो ???

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

चार प्रकार के बल है - साम, दाम, दंड और भेद।

बुद्धि में आठ अंग/कार्य है - सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर धारण करना, उहापोह करना, अर्थ या तात्पर्य को ठीक ठीक समझना, विज्ञानं व तत्व ज्ञान।

राजनीति के चौदह गुण है - देशकाल का ज्ञान, दृढ़ता, कष्ट सहिष्णुता, सर्वविज्ञानता दक्षता, उत्साह, मंत्रगुप्ति, एकवाक्यता, शूरता, भक्तिज्ञान, कृतज्ञता, शरणागत वत्सलता, अधर्म के प्रति क्रोध और गंभीरता।

इसी लिए जीवन जीने के लिए पांचों आयामों की तैयारी जीवन के शुरूआती समय में ही हो जानी चाहिए क्योंकि शुरुआत में हम आदतें बनाते है बाद यदि आदतें हमें बनाती है।

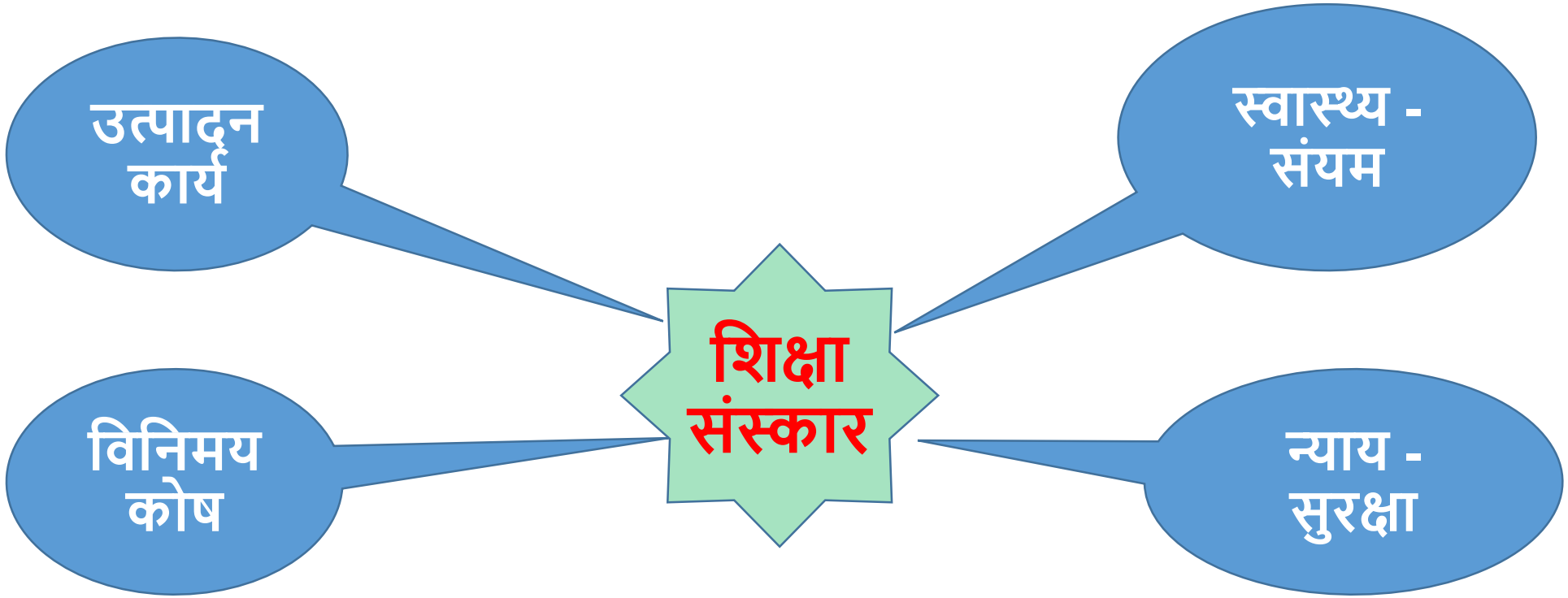

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

मानव लक्ष्य सहज प्रमाण में, से, के लिए सभी संबंध है
ज्ञान, विवेक एवं विज्ञान सहित मानव लक्ष्य के लिए कार्य व्यवहार
सहज निश्चयन शिक्षा-दीक्षा संस्कार में, से, के लिए है।

शिक्षा संस्कार द्वारा ही जीवन के शुरुआती समय में स्वास्थ्य-संयम, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य और विनिमय कोष की प्रकृति सहज समझ, अभ्यास के साथ लक्ष्य की दिशा में कुशल बनाया जाए क्योंकि इन सभी में दक्ष हुए बिना समाधान और सुख की निरंतरता संभव ही नहीं है। और यही सर्वांगीण विकास है।

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

WE WORK ON FOLLOWING WITH EDUCATION

उत्पादन कार्य और विनिमय कोष (SELF-EMPLOYED & ENTERPRENEURE)

Kitchen Garden & other production,
Cooperative House Production,
Self Helping Groups,
Micro Finance etc.

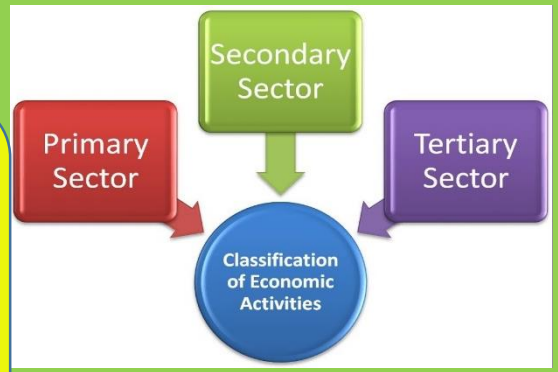

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

We understand it that's why

WE PRODUCE LIVE CERTIFICATE WITH THESE आयाम INSTEAD OF PAPER CERTIFICATE

विद्यालय में राष्ट्र की नियति का निर्माण

तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्म विद्यऽन्या शिल्पनैपुणम्॥